लालच बुरी बला है

मेरा नाम रचना टोप्पो है. मै २१ साल की छत्तीसगढ़ी लड़की हू. मेरा बदन भरा हुआ, नाक नक्श तीखे, सांवला रंग, तने हुऐ स्तन, भरे हुऐ जांघे, पुष्ट पिछवाड़ा. कुल मिला कर मै ऐसी लड़की हूं जिसको पाने के लिए लड़के तरसते है. जवानी के दहलीज पर कदम रखते ही मुझे पता चल गया कि मेरी क्या अहमियत है. मुझे ये भी पता चल गया कि जितने लड़के मेरे आगे पिछे घुमते है, मुझे हमेशा प्रपोज करते है, ये कहते है कि मुझसे शादी करना चाहते है. असल मे इन मे से कोई भी ऐसा कुछ नही करना चाहता. सब मेरी जवानी का मजा लुटना चाहते है और जब दिल भर जाऐ तो किनारा कर लेना चाहते है. जब मुझे ये समझ आ गया तो मैने भी प्यार व्यार के चक्कर मे पड़ना ठीक नही समझा और लड़को को इस्तेमाल करना शुरू किया. उनको दर्शाति कि सिर्फ उन से ही प्यार है और बाकि सब सिर्फ फ्रेंड है और कुछ नही. वो ज्यादातर किस करते या कभी मेरे स्तनो से खेल लेते या कभी एक आत बार मेरी पेन्टी मे हाथ डाल कर मेरी चुत के बालो को सहला लेते. इस से ना तो कुछ कर पाते न उनको कभी मौका मिलता. इस के बदले मेरे हर जरूरत का ख्याल रखते, मेरे उन शौक को पुरा करते जो मै अपने जेब खर्च से पुरा नही कर पाती. पर इन मे से कुछ ऐसे भी हैं जो सीधे बात करते हैं, कितना लेगी, क्या चाहिए ऐसी बाते करते. इन को घुमाना मुश्किल होता है, मुंह खोल कर एक कीमत बताओ और ये लोग वो कीमत उसी टाईम पर अदा कर देते है. और दोपहर में अपने घर पर, या किसी रेस्ट हाऊस में, या फ्रेंड के खाली घर मे, या किसी विराने में, या किसी होटल के आलीशान कमरे में अपनी कीमत वसूल कर लेते है, सूद समेत. मेरा ऐसे ३-४ लोगो से भी पाला है जिन्होने मेरी जवानी को जी भर के निचोड़ा है. बाकि लोग जो उपरी मजा लेते है संख्या मे १०-१२ है.

एक बार एक बस स्टॉप कर खड़ी होकर बस का वेट कर रही थी. अपनी जवानी का नजारा दिखाने के लिए मैने गहरे गले का टी शर्ट पहन रखा था और सोने पर सुहागा अंदर ब्रा भी नही पहनी थी. बाकि लड़कियो को ये अजीब लगे पर ऐसी लड़किया ज्यादातर सती सावित्री टाईप होती है. मेरे स्तन धले हुए नही थे और काफी तने हुए थे तो मेरा काम बिना ब्रा के भी चल जाता था. और अगर मै लड़को को ऐसे नजारे नही दिखाऊंगी तो मुझ पर खर्चा करने वालो ऊल्लूओं की तादाद कैसे बढ़गी. उस दिन मार्केट बंद था तो सभी दुकानो पर ताला पड़ा था, मै अकेले बस स्टॉप पर खड़ी थी. बस का दूर दूर तक नामो निशान नही था और बहुत बोर लग रहा था. अचानक मेरा ध्यान एक दुकान पर गया. एक सोने चांदी के गहनो की दुकान खुली हुई थी, मार्केट बंद था पर शायद दुकानदार शायद कुछ काम कर रहा था इसलिए दुकान खोल कर रखा था. मुझे हर लड़की की तरह गहनो का शौक तो है पर सोने के गहने खरीदने की औकात नही है. मै इतने पैसे भी नही रखी थी कि चांदी का छल्ला ही खरीद लूं. फिर मैने सोचा कि यहां खड़े हो कर बोर होने से अच्छा है कि दुकान मे जा कर टाईम पास करूं.

ये सोच कर मै दुकान कि तरफ चल पड़ी. दुकान में जैसे ही घुसी तो देखा कि एक २१-२२ साल का लड़का काऊंटर पर बठा है जो शायद दुकान का मालिक था और एक १६-१७ साल का लड़का जो बाहर काम कर रहा था. वो उसका भाई रहा होगा क्योकि उसके गले मे तीन सोने के चेन और हर उंगली मे

सोने की अंगूठी थी. दुकान में काम करने वाले लड़के की इतनी हैसीयत तो नही हो सकती. दुकान के मालिक ने खड़े हो कर अभीवादन किया और अपना नाम दिपक सोनी बताया. उसने मेरे आने का कारण पुछा तो मैने कहा कि मुझे सोने के गहने देखने है. उसके चेहरे की चमक देख कर साफ पता चल रहा था कि तो मेरी खूबसूरती से कितना प्रभावित हुआ है. इतनी सी बाते हुई पर उसकी नजर इतनी देर मे मेरे बदन पर दो तीन बार घुम गई. मुझे न तो अजीब लगा न खराब क्योकि ऐसी नजरो से तो दिन भर में कई बार गुजरती हूं. वो एक साईड होकर गहनो के बाक्स निकालने लगा. २०-२५ बाक्स निकालने के बाद दो एक एक करके गहने दिखाने लगा साथ मे कीमत भी बताता जा रहा था और ये भी कि उस गहने में कितना डिस्काऊंट हो सकता है. अब मुझे गहने लेने तो थे नही बस टाईम पास कर रही थी और और डिजाईन के लिए कहती. वो गहने दिखाते दिखाते नही थका पर मैं गहने देखते देखते थक गई. कमर हलकी दर्द करने लगी तो मैने अपने दोनो कोहनी टेबल पर टिका दिया और थोड़ा झुक कर खड़ी हो गई. थोड़े देर में महसूस हुआ कि उसके गहने दिखाने की स्पीड में गिरावट आ गई है. मैने चोर नजरो से उसकी तरफ देखा कि उसका ध्यान कहां है. मैने इस तरह से देखा कि उसको पता न चले मै उसे देख रही हूं. मैने उसे अपनी तरफ ही देखते पाया, वो मुझे एक टक बिना पलके झपकाए देख रहा था. मुझे थोड़ा अजीब लगा कि वो मुझे क्यो देख रहा है. मैने थोड़े देर गौर किया और नजरे झुका कर निचे की तरफ देखा. अचानक मैने गौर किया कि क्योकि मै गहरे गले का टी शर्ट पहना था और ब्रा नही पहना था इसलिए मेरे स्तन का ८०% भाग नजर आ रहा था. शायद जिस कोण से वो देख रहा था वहां से मेरे निप्पल भी दिख रहे थे. ये मेरे टेबल पर झुकने की वजह से हुआ था. मुझे अंदर से खुशी महसूस हो रही थी कि वो मेरी तरफ ही देख रहा था. मैने न उठने की कोशिश की न ही स्तनो को छुपाने की कोशिश की, बल्कि और झुक गई कि उसको और ज्यादा नजारा दिखने लगे. मैने दो चार गहने और देखे और एक हार पसंद किया. अचानक चेहरा उठा कर मैने उसकी कीमत पुछी. जैसे ही चेहरा उठाया तो वो सकपका गया. उसे लगा उसकी चोरी पकड़ी गई है. उसने स्तनो से नजरे हटा ली और मेरे चेहरे की तरफ देखने लगा. मैने एक बार निचे देखा और उसकी चेहरे की तरफ देख कर मुस्कुरा दी. वो और सकपका गया और नजरे चुराने लगा. पर मैने उठने की कोशिश नही की तो उसे थोड़ा अजीब लगा. वो बार बार मेरे टी शर्ट के गहराईयो को देखता और नजरे चुरा लेता. ऐसा करने मे कई बार हमारी नजरे टकराई और मेरा जवाब एक हल्की सी मुस्कुराहट होती थी. उसे लगा कि ये प्रोतसाहन है और सच में ये प्रोतसाहन ही था. फिर जब उसकी हिम्मत बढ़ी तो वो मेरी हर बात का जवाब मेरे स्तनो की तरफ देख कर देने लगा. ये जानते हुए कि मै उसके चेहरे की तरफ देख रही हूं फिर भी वो मेरी स्तनो से नजरे नही हटाता था. मैने आखिर एक पतली जंजीर का चेन पसंद कर लिया और कीमत पुछी. उसने कीमत बताई तो मैने बुरा सा मुंह बना कर कहा कि अभी रख दे मै बाद में ले लुंगी. उसने मुझसे पुछा कि क्या मुझे कीमत ज्यादा लग रही है. तो मैने प्यार से कहा कि इतने पैसे मेरे पास अभी नही है. उसने कहा कि मै वो चेन ले जाऊं और बाद में पैसे ला कर दे दुं. मैने कहा कि कि इतने जल्दी पैसे नही हो पाऐंगे मेरे पास. उसने कहा, "जब हो पाऐंगे तब दे देना." मैने कहा कि अगर हो ही न पाऐं तो. उसने मेरे चेहरे

को घूर कर देखा और मुस्कुरा कर कहा, "तो मत देना. लेकिन अभी बता दो कि हो पाऐंगे या नहीं." मैने पिछा छुड़ाने के लिए कह दिया कि नही हो पाऐंगे. उसने कहा, "कोई बात नही." मैने कहा कि उसे नुकसान हो जाऐगा. उसने कहा, "कीमत दुसरे तरह से भी अदा की जा सकती है. आप दुसरे तरह से पेमेन्ट कर सकती हैं तो इस चेन को फ्री मे ले जाईये." मैने पुछा, "किस तरह से पेमेन्ट कर सकती हूं." उसने धीरे ने अपनी हथेली मेरे टी शर्ट के अंदर सरका दी और मेरे दोनो स्तनो को पकड़ कर धीरे धीरे मसलने लगा. मै हलके से मुस्कुराई पर कोई प्रतिक्रिया नही की. ३० सेकण्ड के बाद बोली, "चलेगा." उसने अपने भाई की तरफ देखा तो मैने कहा, "कोई दिक्कत नही है. उसे भी बुला लो." उसने धीरे से चिल्ला कर कहा, "प्रकाश, अंदर आ जल्दी."

प्रकाश जल्दी से उठ कर अंदर आ गया और हमारी टेबल की तरफ चला आया. जैसे ही उसने हम दोनो को देखा उसका मुंह खुला का खुला रह गया. उसके भाई का हाथ अभी भी मेरी टी शर्ट के अंदर था और वो धीरे धीरे मेरी स्तनो को मसल रहा था. इस से पहले कि वो कुछ बोलता दीपक बल पड़ा, "जा जल्दी से शटर गिरा के आ जा, तेरे भाई की तरफ से तुझे एक तोहफा है." वो मुस्कुराया और जल्दी से बाहर की ओर लपका. कुछ ही सेकेण्ड में शटर के बंद होने की आवाज आई और उसके कुछ ही देर बाद प्रकाश मेरे पास खड़ा था. दीपक हाथ अंदर रखे हुए ही मेरे गालो और होठो को चुमने लगा. मै उसी तरह से खड़ी रही और थोड़े देर के बाद मैने महसूस किया कि प्रकाश मेरे पीछे खड़े हो कर मेरे पेंट का बटन खोल रहा है. पेंट का बटन खुलते ही वो मेरी पेंट को मेरेई पैन्टी के साथ नीचे सरकाने लगा. पोज ऐसा था कि उसने आसानी से पेंट उतार दी. मैने सैंडल भी निकाल दिया जिस से वो मेरे पेंट और पैंन्टी को मेरी टांगो से निकाल सके. दोनो के निकलते ही मै कमर के नीचे पूरी तरह से नंगी दो गई. वो घुटनो के बल बैठ कर मेरे चुत्तड़ो को चुमने लगा. थोड़ा निचे झुक कर वो मेरी जांघो को अपनी जीभ से चाटने लगा. और साथ ही मेरी चुत को सहलाने लगा. बीच बीच में मेरी चुत में उंगली घुसा देता और फिर निकाल लेता. दीपक मेरे गालो और होठो को चुमने मे व्यस्त था तो मैने उसे रोका और सीधे खड़ी हो गई. मैने अपनी टी शर्ट उतारी और टेबल पर रख दी. असल में उसका भाई बहुत तेज जा रहा था और वो उसकी अपेक्षा बहुत धीरे. मेरे टी शर्ट के उतरते ही मेरे स्तन उसकी आंखो के सामने थे और बिना समय बरबाद दिये उसने मेरे दोनो स्तन पकड़ लिये और मेरे स्तनो को जोर जोर से मसलने लगा. उसने मेरे निप्पल को मुंह मे ले कर चुसना भी चालू कर दिया. लगभग १० मिनट के बाद दोनो ने मुझे छोड़ा और अलग हो गये. मैने कहा, "अब मेन काम करते है, कौन पहले." दीपक खुद आगे आया और मै सोफे पर लेट गई. मैने टांगे फैला दी और वो जल्दी जल्दी कपड़े उतारने लगा. पुरी तरह से नंगा हो कर वो मेरे उपर लेट गया और मेरे स्तनो से खेलने लगा. थोड़े देर के बाद मैने खुद कहा, "अब जल्दी करो." उसने पोजिशन बदली और मेरी टांगो के बीच आ गया और अपना लण्ड मेरी चुत पर लगा कर धक्का लगाया. लण्ड सरसरा कर अंदर चला गया और उसने धक्के लगाना शुरू किया. उसने अपनी हथेली मेरे कंधे पर रखा हुआ था और बीच बीच में मेरे होठो को चुम लेता था. १५ मिनट तक लगातार धक्के लगाने बाद उसने कहा, "निकलने वाला है." मैने कहा, "कोई बात नही अंदर ही डाल दो." उसने धक्को

की गति बढ़ाई और अपना वीर्य अंदर छोड़ कर खड़ा हो गया. उसके हटते ही प्रकाश मेरे उपर सवार हो गया. मेरे चुत में अपना लण्ड डाल कर तेज गति से धक्के लगाने लगा. गति तेज थी पर था तो बच्चा ही तो ज्यादा देर सम्भाल नही पाया और अंदर वीर्य छोड़ कर खड़ा हो गया.

दीपक ने उससे कहा, "भाई एक बार और." उसने अनमने ढ़ंग से कहा, "नही, बस हो गया." इनता कह कर वो जल्दी जल्दी कपड़े पहन कर दुकान से बाहर चला गया. दीपक अपने लण्ड को सहलाने लगा. जब लण्ड पुनः खड़ा हो गया तो वो मेरे पास आया और बोला, "पोज चैंज करे क्या?" मैने पुछा, "कैसे?" उसने मुझे खड़ा किया और कहा, "तेबल पर झुक जाओ, पिछे से डालुंगा." मैने थोड़ी देर उसे देखा और पर्स से क्रीम निकाल कर उसे दे दी और टेबत पर हाथ रख कर सामने की ओर झुक कर खड़ी हो गई. उसने क्रीम से लण्ड भीगाया और मेरे गांड़ मे लण्ड डालने की कोशिश करने लगा. हालाकि इसका मुझे अनुभव था पर फिर भी मुझे दर्द हो रहा था. आखिरकार वो लण्ड अंदर घुसाने मे सफल हो गया और घक्के लगाने लगा. साथ ही उसने मेरे स्तनो को पीछे से पकड़ कर जोर जोर से मसलने लगा. १५ मिनट के लगातार धक्को के बाद वो संखलित होकर अलग हो गया. मैने अपने आप को साफ किया और कपड़े पहने. फिर उसने मुझे चेन दी और मै खुशी खुशी चेन लेकर घर आ गई.

दुसरे दिन मैने सोचा कि किसी और सुनार को चेन दिखा कर कीमत पुछती हूं. ये सोच कर मै चेन लेकर एक सुनार के पास गई. सुनार को चेन दिखा कर मैने उस से उसका रेट पुछा. सुनार ने पहले चेन देखा फिर मुझे देखा, फिर धीरे से कहा, "४०० रू मात्र, पीतल पर सोने का पालिश किया हुआ है." मुझे तो झटका लगा. मै फौरन ही उस दुकान की तरफ चल पड़ी. उस दुकाने में पहुंची तो कोई और बैठा था, एक बूढ़ा आदमी. मैने दीपक और प्रकाश के बारे में पुछा तो उसने बताया कि वो दोनो उसके रिश्तेदार है और दो दिन के लिए आए थे. उसने बताया कि दोनो कल शाम कि गाड़ी से वापस चले गये. मेरे तो होश उड़ गये. आज तक मै लोगो को चुना लगाती थी ये दोनो मुझे चुना लगा गये. उस आदमी ने पुछा भी कि क्या काम है. मैने कहा बस मिलना था और ये बोल कर बाहर आ गई. क्या बोलती कुछ बोलने लायक ही नही था मेरे पास.